अप्रैल फूल दिवस

एमिली केली

चित्र: सी.ए. नोबेन्स

अप्रैल फूल दिवस

एमिली केली

चित्र: सी.ए. नोबेन्स

MARCH
8
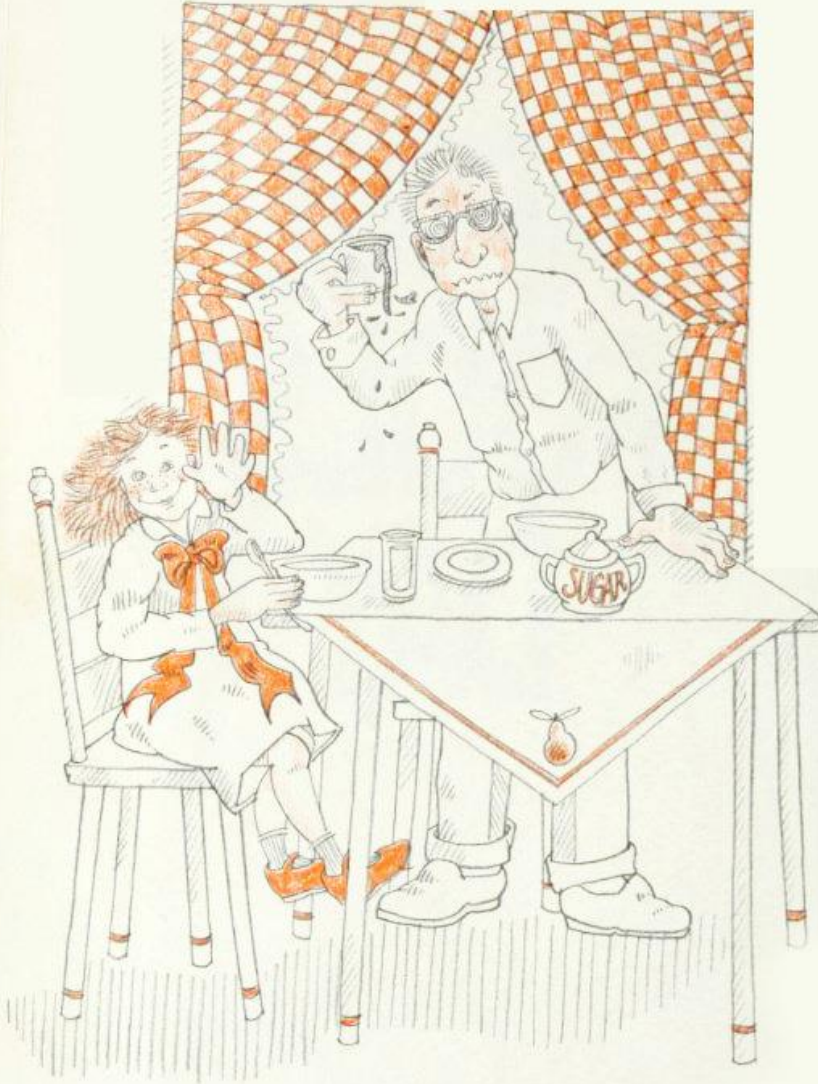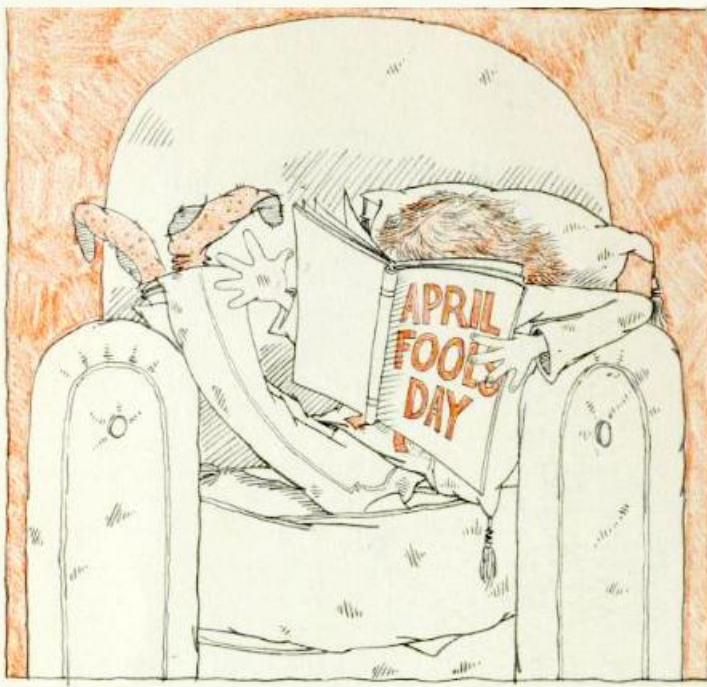
यह शायद आप द्वारा अब तक पढ़ी

सबसे खराब किताब होगी!

यह किताब उबाऊ है,

और उसके चित्र भी बदसूरत हैं.

आप चाहें तो इस किताब को

अभी नीचे रख सकते हैं.
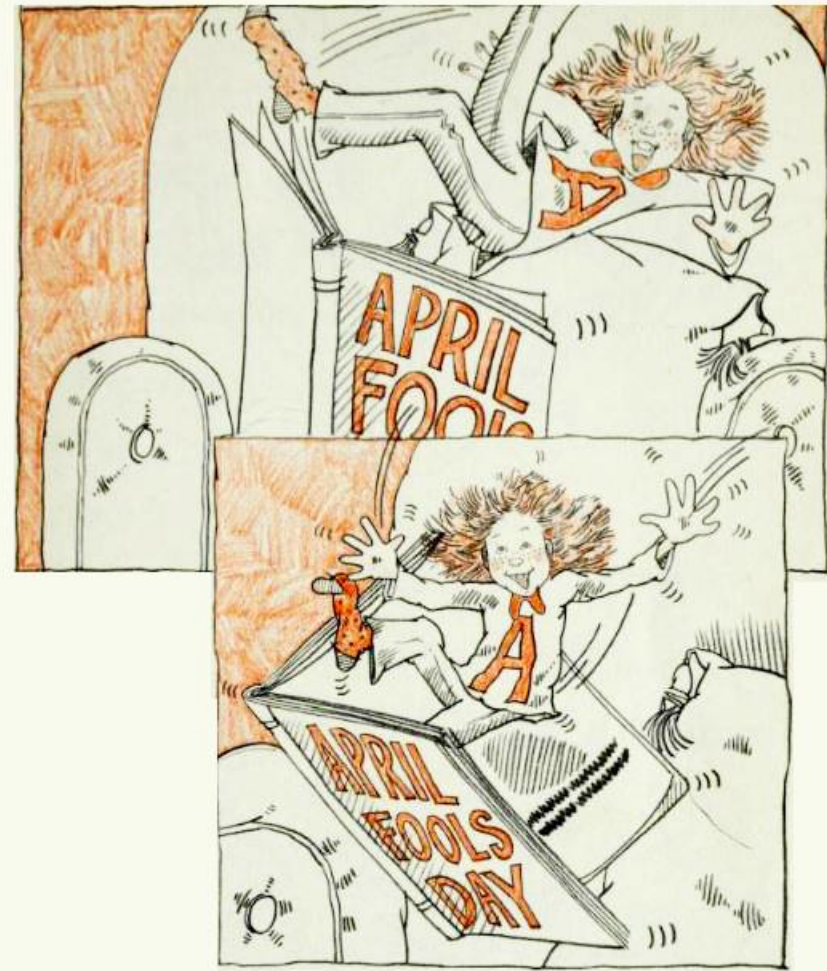
पर ज़रा एक मिनट रुकें!

अप्रैल फूल!
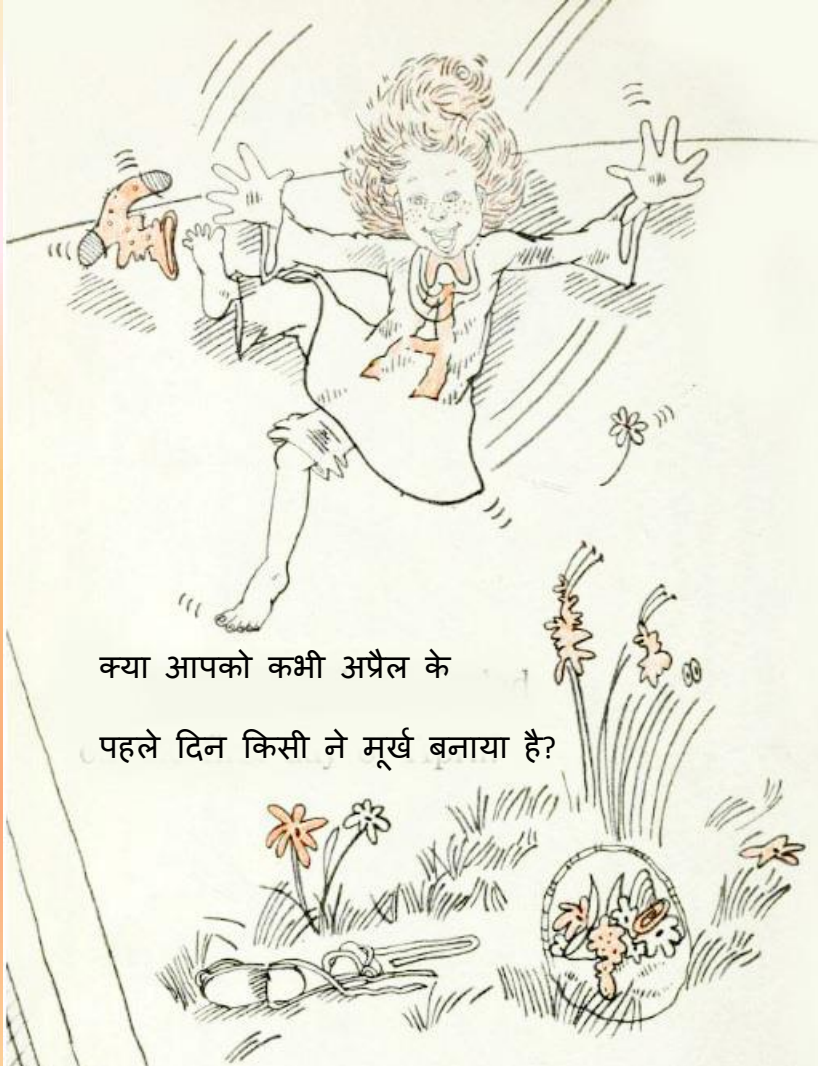
क्या आपको कभी अप्रैल के

पहले दिन किसी ने मूर्ख बनाया है?

तो फिर आप अकेले नहीं हैं.

पहली अप्रैल, सैकड़ों सालों से

मूर्ख बनाने का दिन रहा है.

उस दिन थैंक्सगिविंग की तरह

सरकारी छुट्टी नहीं होती है,

लेकिन अप्रैल फूल दिवस हर साल

अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, कनाडा,

ऑस्ट्रेलिया और फ्रांस में

मनाया जाता है.

कोई भी निश्चित रूप से नहीं जानता

कि अप्रैल फूल बनाना कब शुरू हुआ.

कुछ लोगों का मानना है कि

यह रोमन काल में शुरू हुआ था

आज से 2,000 साल से भी पहले.

उनका मानना है कि इसकी शुरुआत

प्रोसेरपीना की रोमन कहानी से हुई थी.

प्रोसेरपीना की माँ का नाम सेरेस था.

सेरेस एक देवी थी.

वह अनाज और फसल की देवी थी.

एक दिन प्रोसेरपीना फूल चुन रही थी.

जब मृतकों के देवता प्लूटो ने उसे देखा.

प्लूटो को वो बहुत सुंदर लगी.

प्लूटो उसे अपनी रानी बनाना चाहता था.

प्लूटो ने प्रोसेरपीना को चुराने का फैसला किया.

प्लूटो उसे मृतकों की भूमि पर ले गया.

प्रोसेरपीना उसके साथ नहीं जाना चाहती थी.

वह मृतकों की भूमि में नहीं रहना चाहती थी.

सेरेस ने मदद के लिए प्रोसेरपीना की पुकार सुनी.

वह अपनी बेटी की तलाश करने लगी,

लेकिन उसकी तलाश

केवल एक "मूर्खतापूर्ण काम" था.

क्योंकि सेरेस केवल प्रोसेरपीना की आवाज़ की

प्रतिध्वनि का पीछा ही कर सकती थी.

वह मृतकों की भूमि पर जा नहीं सकती थी.

प्लूटो के अलावा कोई भी जीवित लोगों की भूमि

और मृतकों की भूमि के बीच, आ-जा नहीं जा सकता था.

आज कुछ लोग कहते हैं कि अप्रैल फूल बनाने

का सिलसिला इस कहानी से हुआ

कि कैसे प्लूटो ने सेरेस को मूर्ख बनाया.

अप्रैल फूल दिवस की शुरुआत कैसे हुई,

इस बारे में एक और किंवदंती है -

"गोथम के समझदार आदमी" की कहानी.

1200 के दशक में, जॉन इंग्लैंड के राजा थे.

एक वसंत के दिन वे नॉटिंघम जा रहे थे.

वे गोथम के घास के मैदान से होकर

जाने की योजना बना रहे थे.

उन दिनों एक प्रथा थी कि राजा

जिस किसी भी मैदान पर चलते थे,

वह सार्वजनिक सड़क बन जाती थी.

गोथम के लोग नहीं चाहते थे

कि उनका घास का मैदान एक सड़क बने.

इसलिए उन्होंने राजा जॉन को उससे दूर रखा.

उससे राजा बहुत क्रोधित हुए.

बाद में उन्होंने एक अधिकारी को

यह पता लगाने के लिए भेजा

कि लोगों ने इतनी असभ्यता क्यों दिखाई थी.

राजा उन्हें सजा देना चाहता था.

जब लोगों ने सुना कि राजा का अधिकारी आ रहा है.

तो उन्हें क्या करना है,

यह तय करने के लिए वे सभी एकत्र हुए.

राजा के अधिकारी ने गोथम पहुंचने पर यह पाया.

कुछ लोग तालाब में एक मछली को

डुबोने की कोशिश कर रहे थे.

अन्य लोग अपने वैगनों को

खलिहानों की छतों पर खींच रहे थे.

लोगों ने कहा कि वे अपनी छतों को

धूप से बचाना चाहते थे.
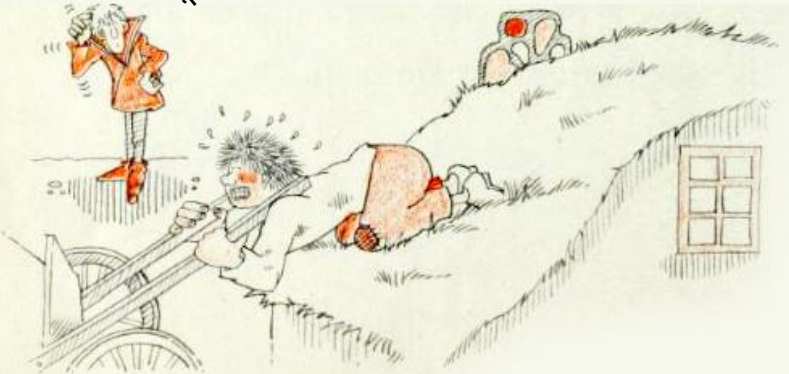
कुछ अन्य लोग पनीर के गोलों को

पहाड़ी से नीचे लुढ़का रहे थे.

उन्होंने कहा कि उससे पनीर सीधे

नॉटिंघम की मंडी में पहुँच जाएगा.
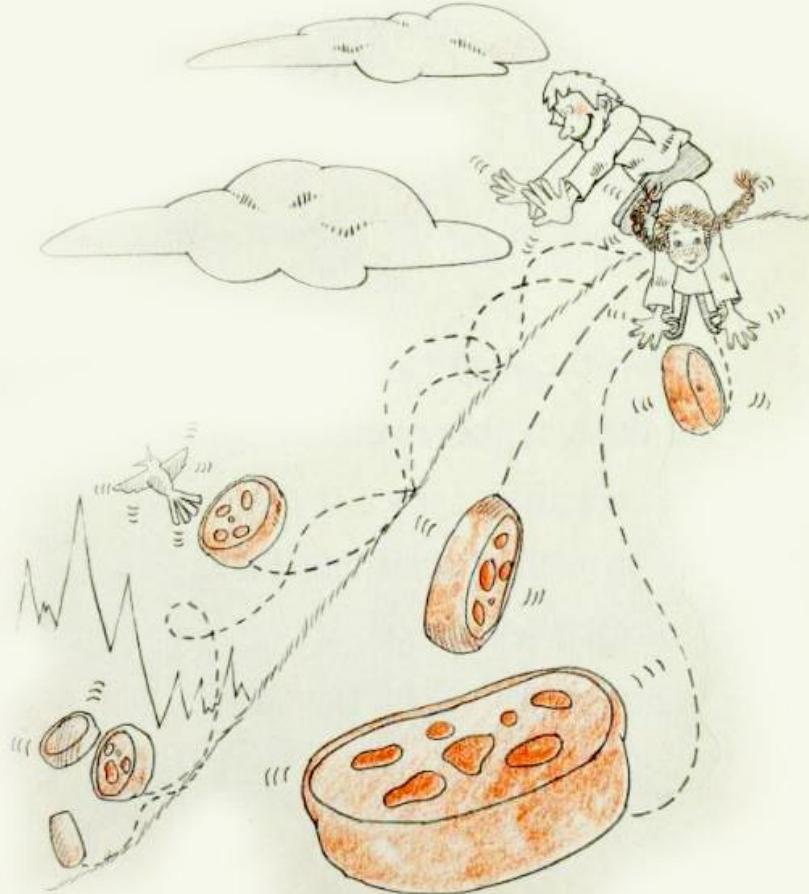
जब राजा के अधिकारी ने यह सब देखा,

तो उसे वे सभी लोग मूर्ख लगे.

उसने राजा जॉन से कहा कि वे

उन्हें दंडित करने की जहमत न उठाएँ.

कुछ लोगों का कहना है

कि इस तरह अप्रैल फूल दिवस की शुरुआत हुई.

एक और लोकप्रिय मान्यता के अनुसार

अप्रैल फूल दिवस की शुरुआत फ्रांस में हुई थी.

1564 में राजा चार्ल्स-11 ने नए ग्रेगोरियन कैलेंडर

का उपयोग करने का फैसला किया.

इस कैलेंडर ने, साल के पहले दिन को

1 अप्रैल से, 1 जनवरी में बदल दिया.

उन दिनों खबरें धीरे-धीरे ही फैलती थीं.

कुछ लोगों को इस बदलाव

के बारे में बहुत देर बाद ही पता चला.

और कुछ अन्य लोग बिल्कुल नहीं चाहते थे

कि वर्ष का पहला दिन बदला जाए.

कुछ लोगों ने नए साल वाले दिन

पुरानी परंपराओं को जारी रखा.

वे दोस्तों से मिलने गए

उन्होंने एक-दूसरे को उपहार दिए

लेकिन वे गलत दिन जश्न मना रहे थे!

फिर अन्य लोग उनका मज़ाक उड़ाने लगे

जो अभी भी 1 अप्रैल को नया साल मनाते थे.

अंत में अप्रैल फूल दिवस

फ्रांस में एक प्रथा बन गई.

यहाँ एक और कहानी है कि

अप्रैल फूल्स डे की शुरुआत कैसे हुई.

फ्रांस में कुछ लोगों ने देखा

कि वसंत में नदियों में

बहुत सारी मछलियाँ होती थीं.

ऐसा इसलिए था क्योंकि सभी छोटी मछलियाँ

तभी-तभी अपने अंडों से बाहर निकली थीं.

इन छोटी मछलियों को पकड़ना आसान था.

उन्हें आसानी से कांटा डालकर

बेवकूफ़ बनाया जा सकता था.

जल्द ही फ्रांसीसी लोग

जिन्हें आसानी से बेवकूफ़ बनाया जा सकता था,

उन्हें "पोइसन डी'एवरिल" बुलाने लगे.

जिसका मतलब था “अप्रैल की मछली”.
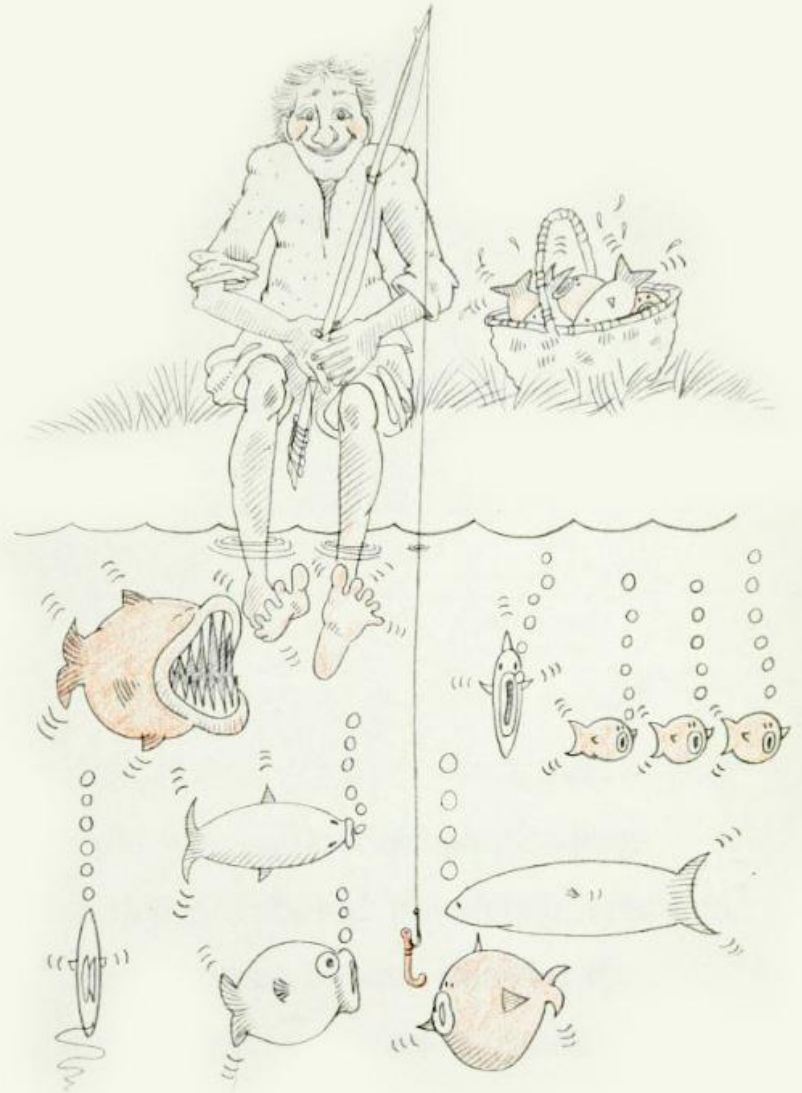
अप्रैल फूल मनाने की प्रथा

फ्रांस में बहुत लोकप्रिय हो गई.

जल्द ही कोई भी 1 अप्रैल को

कोई भी महत्वपूर्ण काम

शुरू नहीं करना चाहता था.

लोग मूर्ख बनने से डरते थे.

लेकिन नेपोलियन बोनापार्ट ने

1 अप्रैल को अपनी दूसरी पत्नी

से शादी की और इसलिए

नेपोलियन का उपनाम

"पोइसन डी"एवरिल" रखा गया.

1700 के दशक में अप्रैल फूल मनाने की प्रथा

ब्रिटेन में काफी लोकप्रिय हो गई.

स्कॉटलैंड में एक लोकप्रिय चाल थी जिसमें

लोगों को मूर्खतापूर्ण कामों पर भेज जाता था.

किसी गरीब व्यक्ति को मुर्गियों के दांत

या कबूतरों के दूध की तलाश में भेजकर

उन्हें बेवकूफ बनाया जाता था.

क्योंकि मुर्गियों के दांत नहीं होते

और कबूतर दूध नहीं देते!

स्कॉटलैंड में एक अन्य लोकप्रिय शरारत

"गोक का शिकार" कहलाती थी.

गोक एक कोयल जैसा पक्षी होता है.

आइए 250 साल पीछे चलकर

देखते हैं कि वो शरारत कैसे काम करती थी.

यह 1 अप्रैल, 1737 की सुबह है.

मिस्टर एंड्रयूज, वाल्टर यंग को

एक पत्र दिया और कहा,

"कृपया यह पत्र मिस्टर स्कॉट को

डंडी लेन में उनके घर पर पर पहुंचाओ,"

"लेकिन वह तो शहर के किनारे पर स्थित है,"

वाल्टर ने कहा.

"मुझे पता है कि उनका घर बहुत दूर है,"

मिस्टर एंड्रयूज ने कहा,

"लेकिन यह एक महत्वपूर्ण पत्र है.

मुझे क़र्ज़ की ज़रुरत है, और मिस्टर स्कॉट

एक बहुत अमीर आदमी हैं."

फिर वाल्टर, डंडी लेन की ओर चल पड़ा.

वहाँ तक पहुँचते हुए,

वो थक चुका था और उसे भूख लग रही थी

लेकिन उसने उस महत्वपूर्ण पत्र को पहुँचाया.

मिस्टर स्कॉट ने संदेश को पढ़ा.

"ओह, मुझे खेद है," उन्होंने कहा,

"मैं मिस्टर एंड्र्यूज को पैसे उधार नहीं दे सकता,

लेकिन मिस्टर ब्लैकबर्न ज़रूर दे सकते हैं.

वे इसी सड़क पर एक मील आगे रहते हैं.

कृपया यह पत्र उनके पास पहुँचा दें."

बेचारे संदेशवाहक ने

फिर से चलना शुरू किया.

पत्र के अंदर

असली संदेश मोटे शब्दों में लिखा था,

"यह अप्रैल की पहली तारीख है.

एक मील और आगे जाओ गोक का शिकार करो."
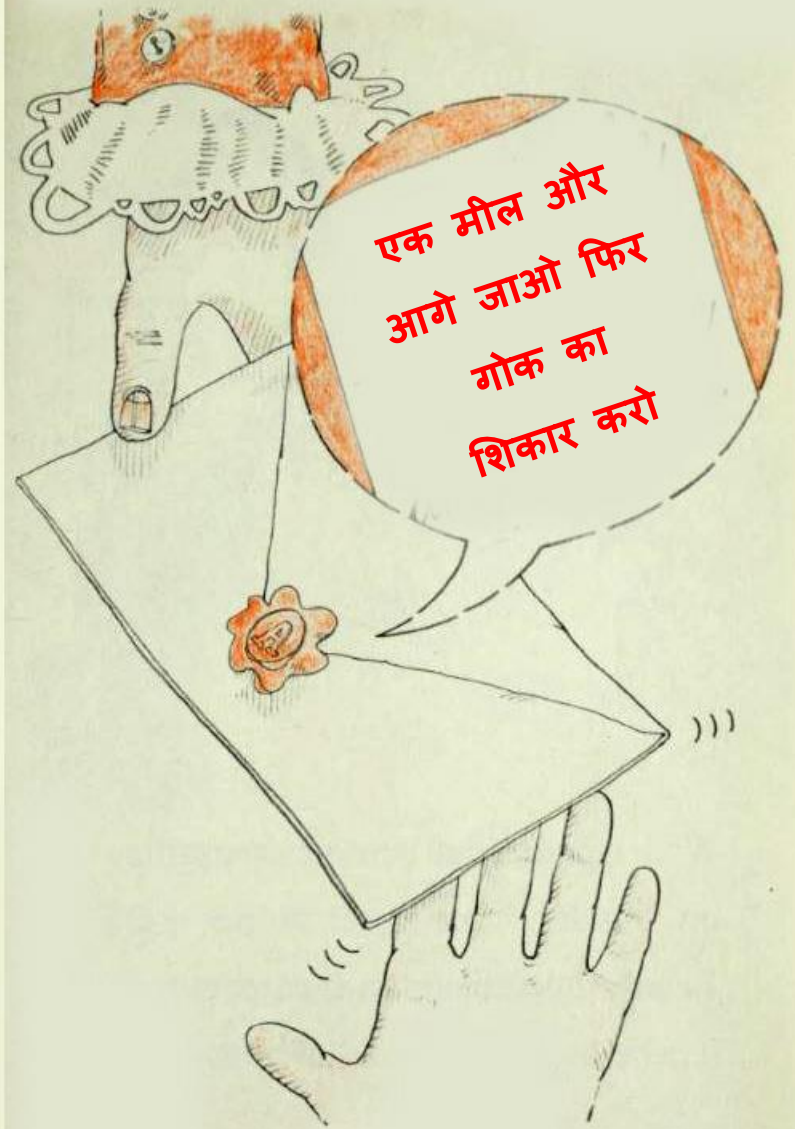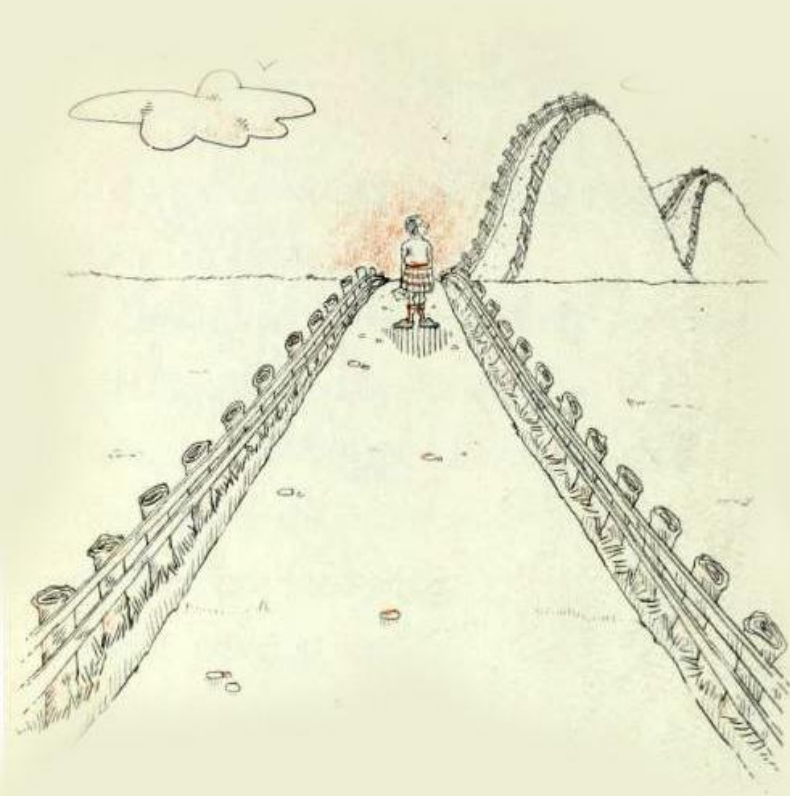
वाल्टर को डंडी लेन पर कोई दूसरा घर नहीं मिला.

अंत में, वह अपने शहर वापिस लौटा.

वहाँ उसने अपने साथी शहरवासियों को

अपने वापस आने का इंतज़ार करते हुए पाया.

सारे शहरवासी हँस रहे हैं.

बेशक, इसमें उन्हें बहुत मज़ा आया था,

लेकिन वाल्टर को उनका मज़ाक अच्छा नहीं लगा था!

1857 में लंदन में भी

कई लोग मूर्ख बने.

उन दिनों टॉवर ऑफ़ लंदन में

एक चिड़ियाघर होता था.

साल में एक बार

चिड़ियाघर के शेरों को नहलाया जाता था.

हर कोई वो दृश्य देखना चाहता था.

1 अप्रैल, 1857 को

सैकड़ों लोगों ने उस शो के टिकट खरीदे.

लेकिन जब वे टॉवर ऑफ़ लंदन पहुँचे,

तो उन्होंने पाया कि वे सभी अप्रैल फूल बने थे.

एक शरारती व्यक्ति ने अप्रैल फूल वाले दिन

उन्हें बेवकूफ बनाते हुए नकली टिकट बेच दिए थे.

अप्रैल फूल बनाने की प्रथा नई दुनिया में

शुरुआती बसने वाले अंग्रेजों के साथ आई.

बच्चे कई तरह के मज़ाक और शरारतें करते थे.

उनका एक पसंदीदा मज़ाक किसी की पीठ पर

"मुझे लात मारो" या "मुझे चुटकी काटो"

लिखी हुई पर्ची लगाना होता था.

पर्ची लगा व्यक्ति बहुत भ्रमित होता था,

लेकिन मज़ाक करने वाले बच्चों को

उसमें बड़ा मज़ा आता था.

एक और तरकीब थी पिघली हुई चॉकलेट से

रुई के टुकड़ों को ढकना.

कई लोग इस "कॉटन कैंडी" से मूर्ख बन जाते थे.

कुछ लोगों को चीनी के डिब्बे

में नमक मिलाना पसंद था.

कुछ नमक के डिब्बे में चीनी डालते थे.

संयुक्त राज्य अमेरिका में

एक मज़ाक जो बहुत लोकप्रिय हुआ

वह इस प्रकार था.

एक व्यक्ति पर्स में एक धागा बाँधता था,

फिर वो पर्स को फुटपाथ पर छोड़ देता था.

वो खुद उस पतले धागे के दूसरे

सिरे को पकड़कर छिप जाता था.

जल्द ही कोई व्यक्ति पर्स उठाने के लिए झुकता,

लेकिन अचानक पर्स उसकी पकड़ से दूर भाग जाता था!

यह चुटकुला बहुत मशहूर हुआ.

एक साल फुटपाथ पर एक पुराना पर्स पड़ा था,

लेकिन किसी ने भी उसे उठाया नहीं.

क्योंकि कोई भी अप्रैल फूल नहीं बनना चाहता था.

आखिरकार एक बहादुर छोटे लड़के ने उसे उठाया.

पर्स के अंदर 80 डॉलर थे.

किसी ने सचमुच में अपना पर्स खो दिया था

उस छोटे लड़के को पर्स लौटाने के लिए इनाम मिला.

इस बार अप्रैल फूल कोई मज़ाक नहीं था.

उन सभी लोगों ने जिन्होंने पर्स नहीं उठाया था

वे सभी अप्रैल फूल बने!

झूठे संदेश लंबे समय से लोकप्रिय रहे हैं.

एक बार, कैलिफोर्निया में आठ सीनेट के सदस्यों को

अपने डेस्क पर एक ही संदेश मिला.

सन्देश में उन्हें तुरंत गवर्नर के कार्यालय में

मिलने जाने को कहा गया था.

वे सभी यह जानकर बेहद शर्मिंदा हुए

कि गवर्नर ने कोई बैठक ही नहीं बुलाई थी.

अप्रैल फूल्स डे पर कुछ चिड़ियाघरों में

लोगों की अपेक्षा, जानवरों के लिए

अधिक टेलीफोन कॉल आते हैं.

1959 में हवाई में एक रेडियो डिस्क जॉकी

ने काफी हलचल मचाई.

हवाई अभी-अभी एक नया राज्य बना था.

डिस्क जॉकी ने लोगों से कहा

कि पिछले साल का उनका टैक्स

उन्हें वापस कर दिया जाएगा.

कल्पना कीजिए कि उससे

लोगों में कितनी उत्तेजना हुई होगी!

अप्रैल फूल्स डे का उद्देश्य मज़ाक करना है

ताकि अप्रैल फूल बने लोग भी हँस सकें.

उसका उद्देश्य झूठे और मतलबी

मज़ाक करना नहीं है.

कई सदियों से अप्रैल फूल

बनाने का मज़ाक चलता आ रहा है.

वो आज भी लोकप्रिय है

और लोग आने वाले सालों में भी उसका मज़ा लेंगे.

कई सालों बाद लोग शायद उन्हीं चालों में दुबारा फँसेंगे

जिनमें हम आज फँस रहे हैं.

और इनमें से कई चालें वही हैं

जिनमें लोग सैकड़ों साल पहले फँसे थे.

अगली 1 अप्रैल को सावधान रहें.

अगर आपको चीनी की डिब्बे में नमक

और नमकदानी में चीनी मिले तो हैरान न हों.

अगर लोग आपको चुटकी काटने लगें

तो देखें कि आपकी पीठ पर कोई पर्ची तो नहीं चिपकी है.

अगर आपको फुटपाथ पर कोई पर्स दिखे

तो क्या आप उसे उठाने की हिम्मत करेंगे?

अगर आप अप्रैल फूल बन भी जाएं

तो भी आप हैरान और परेशान बिल्कुल न हों!